



BPSC

बिहार लोक सेवा आयोग

पेपर - I || भाग - I

इतिहास, कला एवं संस्कृति
(भारत एवं बिहार)

विषय-सूची

1. भारतीय संस्कृति	1
2. विशत	3
3. इंडो-इस्लामिक स्थापत्य कला	13
4. शिल्प कला	18
5. मूर्ति कला	20
6. वस्त्र निर्माण	22
7. चित्र कला	24
8. नृत्य कला	32
9. संगीत-गायन	36
10. रंगमंच	38
11. साहित्य	40
12. प्राचीन भारत	46
13. वैदिक काल	53
14. महाजनपद काल	57
15. मौर्य साम्राज्य	67
16. मौर्योत्तर काल	72
17. गुप्त काल	78
18. गुप्तोत्तर काल	84
19. पूर्व मध्य काल	86
20. मध्य काल	91

भारतीय समाज

1. भारतीय संस्कृति का परिचय	95
2. भारतीय समाज का परिचय	96
3. जाति व्यवस्था	104
4. वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव	112
5. भारत में विवाह	117
6. भारत में परिवार-संयुक्त परिवार	121
7. शरीरगोली	123
8. भारत में धर्म	126
9. भारत में जनजाति	137
10. नगरीकरण, समस्याएं एवं समाधान	154
11. भारत में प्रवास	159
12. विकास संबंधी मुद्दे	167
13. महिला, महिला संगठन व आंदोलन	173
14. भारत में विविधता	181
15. बिहार का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास	184
16. बिहार कला एवं संस्कृति	205

भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति में :- प्राचीन काल से आधुनिक काल तक कला के रूप
साहित्य एवं वास्तुकला के मुख्य पहलू

1. संस्कृति एवं शैक्षिता

2. विशिष्ट एवं उच्चका संरक्षण

3. कला के विविध रूप

1. वास्तुकला/स्थापत्य कला:- स्तूप, चैत्य, विहार, मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा, सिनेगांव (यहूदियों का पूजा स्थल)

2. शिल्पकला:- शतम्भ कला, मूर्तिकला (गांधार शैली-मथुरा शैली-कमरावती शैली)

3. चित्रकला:-

- प्रागैतिहासिक चित्रकला
- बौद्ध-जैन चित्रकला
- अजंता-एलोरा चित्रकला
- राजपूत चित्रकला
- मुगल चित्रकला
- दक्कनी एवं पहाडी चित्रकला
- स्थानीय चित्रकला
- आधुनिक चित्रकला

4. नृत्य एवं संगीत :- शास्त्रीय नृत्य

- लोक नृत्य
- गायन एवं वादन
- रंगमंच

5. भाषा और साहित्य:- संस्कृत, तमिल, तेलगू, उर्दू, गजल, अरामी

6. धर्म-दर्शन

संस्कृति- मानवनिर्मित

भौतिक



मूर्त



- भवन
- परिवहन के साधन
- सुविधाओं के साधन

अभौतिक



अमूर्त



- खान-पान
- रहन-सहन के तरीके
- विचार, धर्म, दर्शन

संस्कृति और शभ्यता

पर्यावरण का मानव निर्मित भाग संस्कृति है । संस्कृति मानव जीवन और समाज को जानने और समझने में सहायक होती है । वस्तुतः किसी समाज में गहराई तक व्याप्त/गुणों का समग्र नाम संस्कृति है । यह किसी समाज के दीर्घकाल तक अपनाई गई पद्धतियों का परिणाम है ।

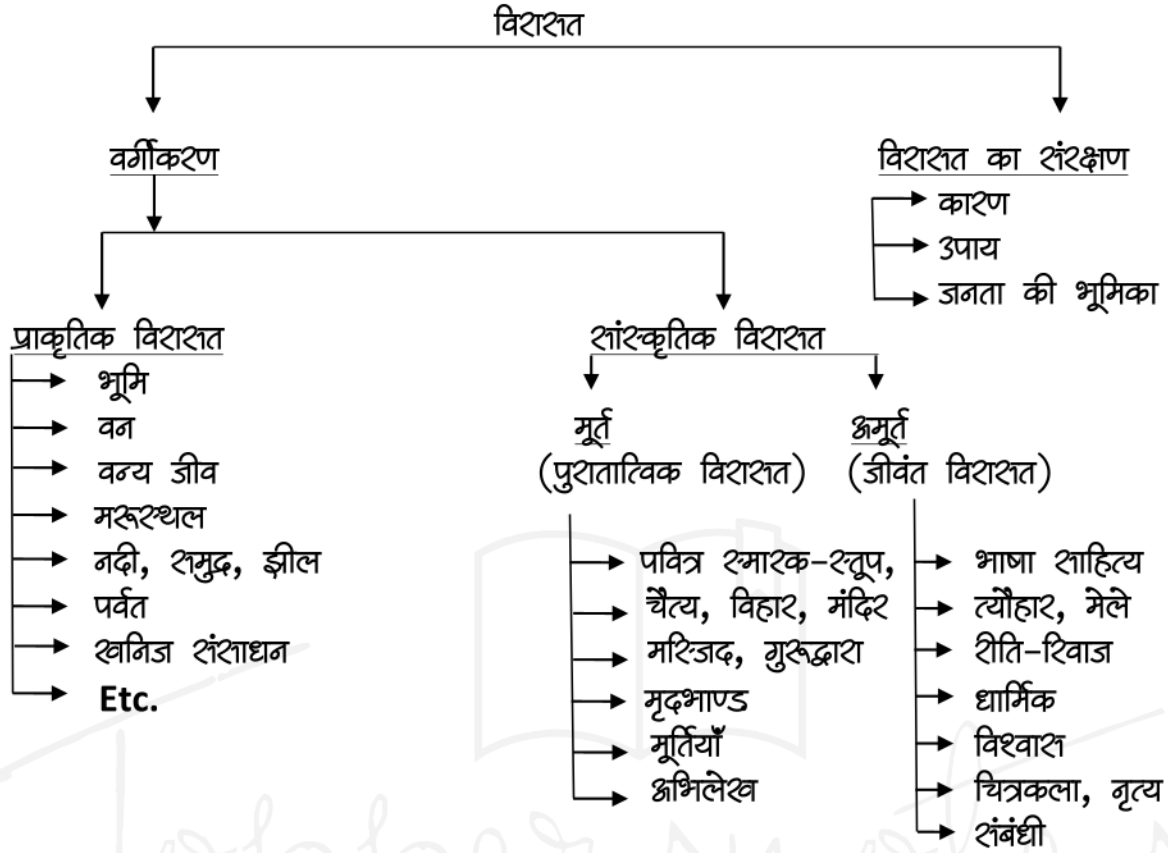
मनुष्य स्वभावतः एक प्रगतिशील प्राणी है । वह अपनी बुद्धि विवेक के माध्यम से चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थितियों को निरंतर सुधारता चलता है । ऐसी प्रत्येक जीवन पद्धति, रीति-रिवाज, नवीन अनुसंधान जिससे मनुष्य पशुओं के दर्जे से ऊपर उठता है शभ्यता कहलाती है ।

शभ्यता से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति सुचित होती है जबकि संस्कृति मानसिक क्षेत्र की प्रगति को दर्शाती है । वस्तुतः मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों को ही सुधार करके ही संतुष्ट नहीं हो जाता (केवल खाद्य) आवश्यकताओं की पूर्ति से ही तृप्त नहीं हो जाता । दरकराल शरीर के साथ मन और आत्मा भी है और इसको संतुष्ट करने के लिए मनुष्य जो विकास करता है उसे संस्कृति कहते हैं । सौन्दर्य की खोज करते हुए वह संगीत, साहित्य, मूर्ति, चित्र, स्थापत्य आदि अनेक कलाओं का विकास करता है ।

सामान्यतया संस्कृति के दो पक्ष होते हैं (1) अर्भौतिक (2) भौतिक
अर्भौतिक संस्कृति को ही संस्कृति के नाम से और भौतिक संस्कृति को शभ्यता के नाम से जाना जाता है ।

संस्कृति जहाँ आन्तरिक है, जिसमें विचार, कलात्मक अनुभूति, धार्मिक आस्थाएं, रीति-रिवाज का समावेश होता है जबकि शभ्यता बाह्य वस्तु है । इस तरह भिन्नताओं के होते हुए भी शभ्यता और संस्कृति एक दूसरे से अनन्त संबंध रखते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं ।

विशासत



विशासत का अर्थ:-

विशासत वह है जो हमें पूर्वजों से प्राप्त हुई है और हमारे चारों ओर विद्यमान है। यह प्राकृतिक अथवा निर्मित है। यह एक और किसी स्थान, क्षेत्र अथवा देश तो दूसरी ओर एक परिवार, समुदाय एवं लोगों की विशिष्टता और पहचान है।

वर्गीकरण:-

विशासत को प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विशासत के रूप में बाँटा जा सकता है।

प्राकृतिक विशासत:-

प्राकृतिक विशासत में प्राकृतिक विशेषताएं जैसे-भूमि, वन, मरुस्थल, वन्य जीव, नदी, समुद्र, ऋतुएं, खनिज संसाधन आदि शामिल हैं। भारत की ऋतुओं की विविध भूमि प्रकारों एवं जीव-जन्तुओं की विविधता ने देश की सांस्कृतिक विशासत के निर्माण को प्रभावित किया। इस तरह भारतीय सांस्कृति, प्रकृति, पर्यावरण एवं लोगों के बीच निकट संबंधों का परिणाम है।

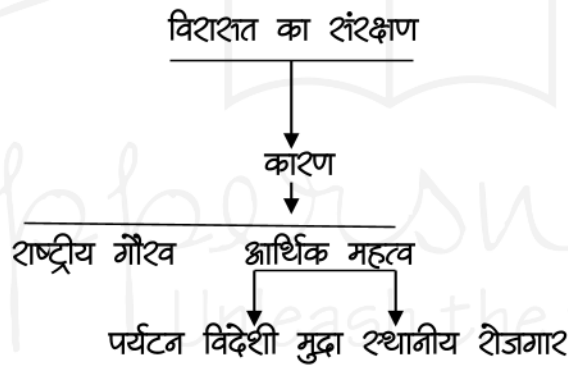
पर्वत, नदियां, पशु-पक्षी, वृक्ष हमारी लोककथाओं, पौराणिक कथाओं एवं कला के अंग रहे हैं। पंचतंत्र की प्रसिद्ध कहानियों अथवा बौद्ध धर्म की जातक कथाओं में पशु-पक्षी महत्वपूर्ण चरित्र हैं। देश के विभिन्न स्थानों की लोककथाओं में पशु-पक्षी का प्रयोग, विषय वस्तु के अर्थ और विचार को स्पष्ट करने के लिए किया गया है। प्रकृति की शक्तियों को देवीय रूप देना भारतीय सांस्कृति का अंग रहा है। जैसे-गंगा-जमुना की पूजा, पीपल, तुलसी जैसे पेड़-पौधों को पवित्र माना जाना। भारतीय शास्त्रीय एवं लोकसंगीत में प्रकृति एवं ऋतुओं के साथ गहरे संबंध देखे जा सकते हैं। “बाइबल के चक्र को दर्शाती है। इस बाइबल के आधारे पर नायक-नायिका के मनोदशा का उल्लेख साहित्य में

हुआ है। हमारी चिकित्सा पद्धतियाँ जैसे- आयुर्वेद पूर्णतः प्रकृति पर ही निर्भर हैं। इस दृष्टि से प्राकृतिक विरासत एवं सांस्कृतिक विरासत के बीच घनिष्ठ संबंध देखा जा सकता है।

सांस्कृतिक विरासत :-

मनुष्य की अपनी योग्यता, कौशल और कलात्मक प्रतिभा के बल पर की गई रचना है। यह विभिन्न धार्मिक और सामाजिक परम्पराओं का परिणाम है। सांस्कृतिक विरासत को मूर्त एवं अमूर्त वर्ग में बांटा जा सकता है। “मूर्त विरासत” पुरातात्विक विरासत भी कही जाती है, इसमें पुरातात्विक स्मारक अथवा जैसे - भवन, किले, शिवके, मूर्तियाँ, अभिलेख, मृदभाण्ड आदि सम्मिलित है।

अमूर्त विरासत में विचारों से लेकर परम्पराओं तक रहन-सहन के ढंग, भाषा, व्यवहार आदि सम्मिलित इन परम्पराओं व विचारों का प्रसार एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक होता है। इन सब से हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक सुंदर और समृद्ध रेगिण चित्र बनता है। वस्तुतः यह अनेक विचार और विश्वासों का मिश्रण ही हमारी सांस्कृतिक विरासत बनाता है। विभिन्न भाषाएँ जैसे- संस्कृत, पालि, प्राकृत, तमिल, तेलगू, फारसी आदि प्रचलित रही तो ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरमाइक लिपियाँ भी मौजूद रही। इतना ही नहीं नृत्य संगीत के विभिन्न रूप, चित्रकल्प इसी सांस्कृतिक विरासत के अंग हैं। इन्हीं अर्थों में भारतीय सांस्कृतिक विरासत को “अनेकता में एकता से युक्त कहा जाता है।”



हमारी विरासत हमारी राष्ट्रीय पहचान का दर्पण है। अतः इसका संरक्षण आवश्यक है। वस्तुतः देश एवं लोगों की पहचान को दर्शाती है। व्यक्ति अपनी विरासत के साथ अपनी पहचान को जोड़ता है जो उसे गौरव प्रदान करती है। अतः इस गौरव की प्रेरणा का संरक्षण आवश्यक है।

पारम्परिक कलाओं एवं हस्तकलाओं को बचाए रखने एवं संरक्षण से ही इनकी निरन्तरता संभव है। हमारा विशाल पर्यटन उद्योग भी विरासत के दम पर चल रहा है। हमारी विरासत पर्यटकों को हमारे देश की ओर आकर्षित करती है और देश के लोगों को एक भाग से दूसरे भाग तक जाने के लिए प्रेरित करती है। इस तरह यह राष्ट्रीय एकीकरण के साथ-साथ उस क्षेत्र के लोगों के लिए आर्थिक लाभ भी देती है तो साथ ही विदेशी मुद्रा प्राप्ति का साधन बन जाती है।

विरासत के लिए चुनौतियाँ:-

समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बचाए और बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। वस्तुतः प्राकृतिक विरासत चाहे भूमि हो या समुद्र, जंगल या मरुस्थल, वनस्पतियाँ एवं पशु-पक्षी सभी को समुचित विकास योजना के अभाव एवं निरंतर दुरुपयोग के कारण खतरा है।

भूमंडलीकरण के कारण होने वाले तीव्र परिवर्तनों ने विश्व के लिए चुनौतियां प्रस्तुत की हैं।

पर्यटन में हुई अनियंत्रित वृद्धि ने भी चुनौतियां बढ़ाई हैं। पर्यावरण और विश्व के संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता का अभाव है।

विश्व के प्रति अवहेलनापूर्ण रवैये ने भी चुनौतियां बढ़ाईं।

विश्व के संरक्षण के उपाय:-

संविधान निर्माताओं ने संविधान में विश्व के संरक्षण के लिए नागरिकों का कर्तव्य भी बताया है कि “हमारी सामाजिक संस्कृति की समृद्ध विश्व का सम्मान एवं संरक्षण करे, वनों, झीलों, नदियों एवं वन्य सहित पर्यावरण को बचाए और उसमें सुधार करे” तथा प्राणियों के लिए करुणा का भाव रखे।

संविधान में उल्लेखित है कि राष्ट्रीय महत्व के प्रत्येक स्मारक कलात्मक या ऐतिहासिक स्थल तथा वस्तुओं को खराब होने, नष्ट होने, हटाने, बेचने या निर्यात से बचाना राज्य का दायित्व होगा। 1952 में “भारतीय वन्य जीव बोर्ड” की स्थापना की गई।

यह सरकार को वन्य जीवों के संरक्षण एवं बचाव के संदर्भ में तथा राष्ट्रीय उद्यान, पक्षी विहार एवं चिडियाघर के निर्माण के संबंध में परामर्श देता है।

“वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम 1972” के तहत राष्ट्रीय उद्यान एवं अभयारण्य की स्थापना की गई है। पुरातात्विक विश्व को सुरक्षित रखने के लिए संसद ने ‘प्राचीन स्मारक एवं पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष अधिनियम 1958’ पारित किया। जिसके तहत पुरातात्विक खुदाई से निकली सामग्री, मूर्तियां आदि की सुरक्षा की जाएगी। (यह अधिनियम भारत सरकार के 1904 के अधिनियम का विस्तार है जो कर्जन के समय आया था)। यह अधिनियम यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी व्यक्ति या एजेंसी सरकार की अनुमति के बिना पुरातात्विक खुदाई नहीं कर सकता।

भारतीय निधि व्यापार अधिनियम 1876 के तहत कहा गया कि अज्ञानक कोई वस्तु मिलने पर लोगों को संबंधित अधिकारियों को सूचित करना अनिवार्य है। यह अधिनियम आज भी लागू है।

जनता की भूमिका

विश्व के संरक्षण में जनता की भी भूमिका है। हम अज्ञात स्मारकों, स्थलों, पुरावशेषों को पहचानने में सहायता कर सकते हैं उनको सुरक्षित कर सकते हैं, उनकी चौकसी कर सकते हैं ताकि स्मारक क्षतिग्रस्त न हो और कोई चोरी न कर सके तथा अपने आस-पास के लोगों को प्राकृतिक और सांस्कृतिक विश्व के संरक्षण के लिए जागरूक कर सकते हैं।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद 1950

इसके अंतर्गत भारत एवं दूसरे देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध एवं आपसी सुझ-बुझ को स्थापित करने के उद्देश्य से इसकी स्थापना की गई यह परिषद भारत सरकार के विदेश मंत्रालय से संबंधित है।

उद्देश्य:-

शांस्कृतिक क्षेत्र में राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ संबंध स्थापित करना और उनका विकास करना दूसरे देशों के साथ भारत के शांस्कृतिक रिश्तों से संबंधित नीतियाँ एवं कार्यक्रम तैयार करने और उनके क्रियान्वयन में भागीदारी करना।

प्रमुख कार्य:-

भारत सरकार की ओर से विदेशी छात्रों को छात्रवृत्तियां देना विदेशों में प्रमुख शांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन करना अर्थात् विदेशों में भारत उत्सव का आयोजन करना व्यवस्था करना।

कलाकार मण्डलियों का आदान प्रदान करना।

“वार्षिक मौलाना आजाद स्मृति व्याख्यान” और “मौलाना आजाद निबंध प्रतियोगिता” का आयोजन करना पुस्तकालयों की स्थापना करना।

विदेश मंत्रालय की ओर से परियोजनाएं आरम्भ करना ।



पवित्र उपवन :-

पवित्र उपवन कुछ वृक्षों से लेकर सैकड़ों हेक्टेयर क्षेत्र में फैले सघन वन होते हैं । ये जनता के वन हैं । उपवन किसी न किसी देवता को समर्पित होता है । इसमें चराई और शिकार प्रतिबंधित होता है ॥ इसमें केवल सुखी लकड़ियों को एकत्रित करने की अनुमति है ।

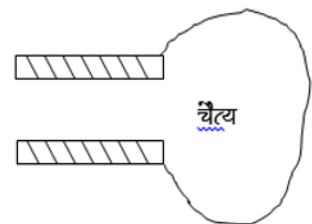
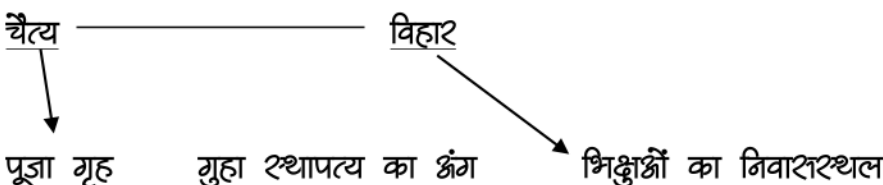
स्तूप पर चित्रों के माध्यम से “कथानक का अंकन” किया जाने लगा ।

प्रकार :-

1. शांशिरिक स्तूप:- इसमें बुद्ध एवं उनके शिष्यों के अंग अवशेष रखे जाते थे जैसे- दाँत, केश आदि।
2. पारिभौगिक स्तूप:- इस स्तूप में बुद्ध द्वारा उपयोग में लाई गई वस्तुएं जैसे- चरण पादुका, भिक्षापात्र आदि रखे जाते थे।
3. उद्देशिका स्तूप:- इसके तहत वे स्तूप आते हैं जिन्हें बुद्ध के जीवन की घटनाओं से संबंधित या उनकी यात्रा से पवित्र हुए स्थानों पर स्मृति के रूप में बनाया जाता था जैसे- शारनाथ, लुम्बिनी, बोधगया के स्तूप ।
4. संकल्पित स्तूप:- इस प्रकार के स्तूप श्रद्धालुओं द्वारा विभिन्न बौद्ध तीर्थस्थलों एवं अन्य स्थानों पर बनाए जाते थे। ये आकार में छोटे होते थे ।

प्रमुख उदाहरण :-

शारनाथ एवं साँची में अशोक द्वारा बनाए गए स्तूप प्रसिद्ध हैं । उसने तक्षकिला में धर्मरक्षिका स्तूप का निर्माण करवाया। मौर्यकाल में शुंग शासन में भरहुत स्तूप में वैदिक का निर्माण करवाया गया । नागार्जुनी कोण्डा स्तूप का निर्माण आन्ध्र में इक्ष्वाकु वंश के शासकों के द्वारा करवाया गया। यहाँ पर बने विशेष प्रकार के चबूतरे/आयक उल्लेखनीय हैं ।



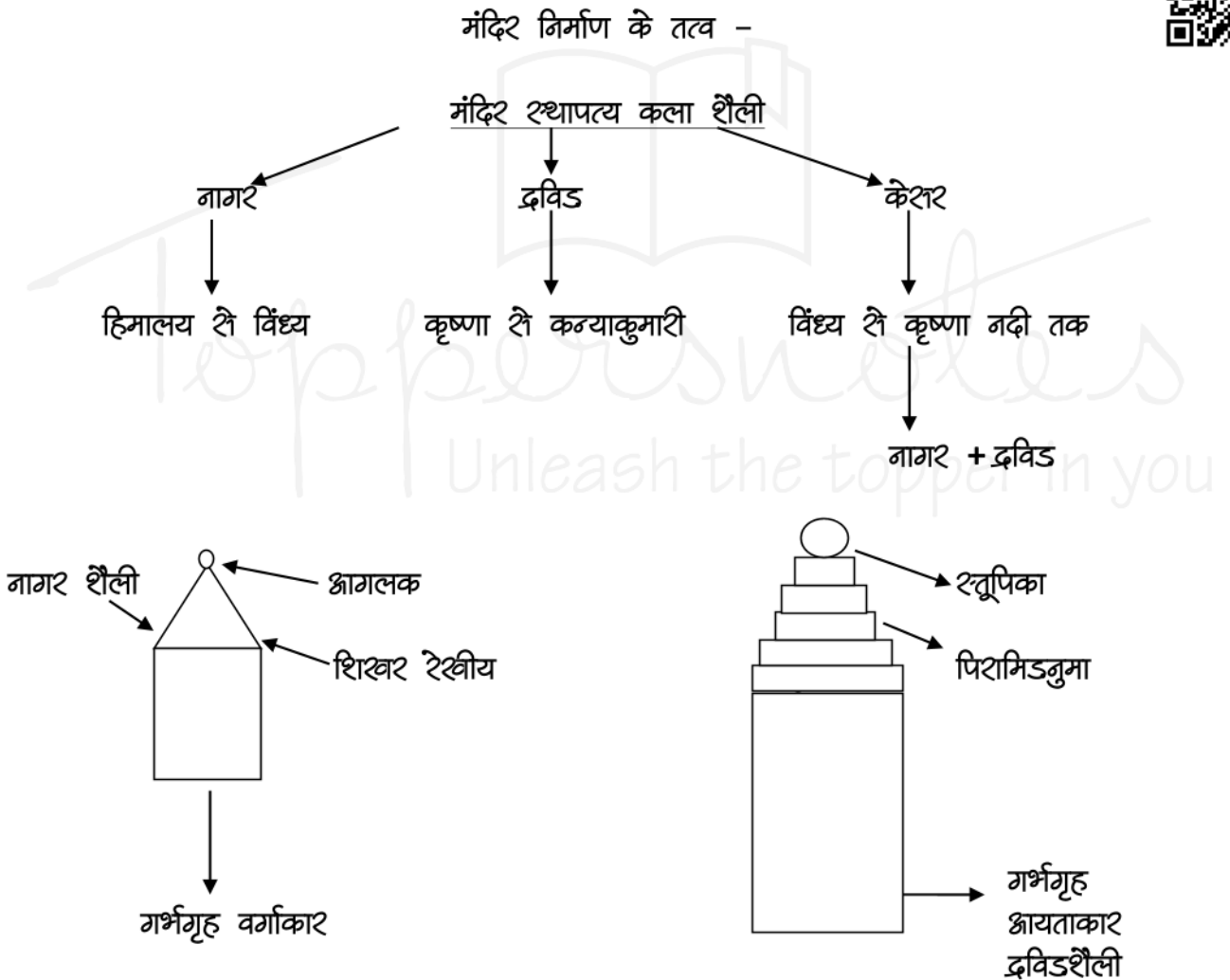
चैत्य -

चैत्य गुफा स्थापत्य के अर्न्तगत चैत्य और विहार का निर्माण किया जाता है। चैत्य बौद्ध और जैन धर्म से संबंधित पूजा गृह होता है। इसे पहाड़ियों को काटकर बनाया जाता है।

चैत्य एक आयताकार कक्ष के रूप में होता है जिसका अंतिम सिरा अर्द्धवृत्ताकार होता है। महाराष्ट्र स्थित है कार्ले का चैत्य सबसे बड़ा है। यहां के स्तम्भ अत्यंत आकर्षक है।

विहार :- विहार भी धार्मिक स्थापत्य का अंग है। भिक्षुओं के निवास हेतु पहाड़ियों को काटकर बनाई गई गुफा को विहार कहा जाता है। उड़ीसा के शासक खारवेल द्वारा उदयगिरी पहाड़ी पर बनवाई गई दो मंजिली शनी गुफा इसका प्रमुख उदाहरण है। इसके अतिरिक्त पश्चिम भारत में कार्ले भज, नासिक आदि स्थानों पर बने विहार भी उल्लेखनीय है।

मण्डप (सभाभवन):- जहाँ भक्तगण बैठते हैं।



मंदिर निर्माण के अंग -

1. अधिष्ठान :- यह चबूतरेनुमा संरचना होती है। जिसे आधार बनाकर मंदिरों का निर्माण किया जाता है। नागर शैली में अधिष्ठान एवं आवश्यक तत्व है जबकि द्रविड शैली में यह आवश्यक नहीं है।
2. गर्भ गृह :- यह मंदिर का मुख्य/सर्वाधिक पवित्र भाग होता है जिसमें देवी-देवता की स्थापना की जाती है। द्रविड शैली में यह आयताकार होता है जबकि नागर शैली में वर्गाकार होता है।

3. शिखर:- गर्भगृह के ऊपर की विशाल निर्मित संरचना को शिखर कहते हैं। नागर शैली में रेखीय शिखर और शीर्ष पर श्रमलक की संरचना होती है जबकि द्रविड शैली में शिखर/विमान पिरामिड के आकार के होते हैं। शीर्ष पर स्तूपिका की संरचना होती है।
4. गोपुरम :- यह मंदिर का प्रवेश द्वार होता है जो द्रविड शैली का अंग है। गोपुरम की विशालता और भव्यता तत्कालीन आर्थिक राजनीतिक समृद्धि को दर्शाती है।
5. परकोटा:- द्रविड मंदिरों में गोपुरम बनाए जाने का एक महत्वपूर्ण कारण इसका दीवारों से घिरा होना था। नागर शैली में मंदिरों में यह प्रायः नहीं पाया जाता।

मंदिर निर्माण शैली

1. नागर शैली :- इस शैली में मंदिर चतुष्कोणीय होते थे और गर्भगृह वर्गाकार होता है। इसके ऊपर रेखीय शिखर जिसके शीर्ष पर श्रमलक की संरचना होती है। मंदिर में “शभा भवन” और प्रदक्षिणापथ भी होता था। उड़ीसा के मंदिर शुद्ध नागर शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं।
2. द्रविड शैली :- इस शैली में मंदिर प्रायः ऋषकोणीय होते थे। गर्भगृह त्र्यकोणीय तथा शिखर पिरामिड के आकार का उसके शीर्ष पर स्तूपिका की संरचना होती है। मंदिर में प्रवेश हेतु गोपुरम अत्यन्त उल्लेखनीय है। द्रविड शैली के ये मंदिर आर्थिक सामाजिक गतिविधियों में संलग्न होते थे। ये निर्माण कार्य एवं व्यापार में हिस्सा लेते थे। बैकिंग गतिविधियों से युक्त होते थे अर्थात् कर्ज देना और ब्याज लेना। इनकी यह भूमिका उत्तर भारत के मंदिरों से इन्हें अलग करती है।
3. बेशर शैली :- मंदिर निर्माण की बेशर शैली में नागर और द्रविड शैली का मिश्रण मिलता है। इस शैली के प्रमुख मंदिरों में होथरल शासकों के द्वारा मैसूर के हेलेबिडु में बनवाया गया होयसलेश्वर मंदिर प्रमुख है।

गुप्तकालीन मंदिर निर्माण की विशेषताएं :-

गुप्तकालीन मंदिरों का निर्माण एक ऊँचे चबूतरे पर होता था। इस पर चढ़ने के लिए चारों ओर सीढ़ियां बनी होती थीं। मंदिर के भीतर एक गर्भगृह होता था। जहाँ पर देवता की मूर्ति स्थापित की जाती थी। गर्भगृह में एक प्रवेशद्वार होता था जो अलंकृत होता था और इसके चारों ओर घूमने के लिए प्रदक्षिणा पथ होता था।

मंदिर की छत प्रायः समतल होती थी। कभी शिखर युक्त मंदिर भी बनते थे। जैसे:- देवगढ़ का दशावतार मंदिर (झांसी) मंदिर मुख्यतः पत्थर से बनते थे किंतु कुछ एक मंदिर ईंट से भी बनाए गए जैसे- कानपुर का भीतरगांव मंदिर

मंदिर का भीतरी भाग सादा होता था और चौखट पर “शंख” का चिह्न बना होता था। गुप्तकालीन मंदिर “नागर शैली” का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उड़ीसा मंदिर समूह:-

- | | |
|--------------|---------------------|
| 1. जगमोहन | - मंडप |
| 2. पिष्ठ | - अधिष्ठान (चबूतरा) |
| 3. मस्तक | - शीर्ष - श्रमलक |
| 4. मण्डी | - शिखर |
| 5. देवल/देअल | - गर्भगृह |

उड़ीसा के प्रमुख मंदिरों में पुरी के निकट कोणार्क सूर्य मंदिर है। यह अश्व द्वारा खींचे जाने वाले और विशाल पहियों वाले सूर्यदेव के आकाश स्थ की परिकल्पना पर आधारित है। इस मंदिर में विभिन्न चित्रों से अलंकरण मिलता है जो पृथ्वी पर जीवन के आनंद और सूर्य की ऊर्जा प्रदायी शक्ति को दर्शाता है इसे “ब्लैक-पैगोडा” के नाम से भी जाना जाता है। इसका निर्माण नरसिंह देव ने किया था।

खजुराहों मंदिर समूह

इनका निर्माण मध्यप्रदेश, बुन्देलखण्ड में चन्देल शासकों के द्वारा 10वीं-11वीं शदी में किया गया। यह मंदिर नागर शैली के अंतर्गत बने हैं। यह मंदिर समूह शैव, वैष्णव एवं जैन धर्म से संबंधित है इसलिए विद्वान फर्ग्युसन ने कहा कि “खजुराहो के मंदिर साम्प्रदायिक सौहार्द की प्रेरणा से निर्मित हुए हैं।”

विशेषताएं :-

- इन मंदिरों का निर्माण खुले स्थानों पर हुआ है। इनके चारों ओर कोई दीवार नहीं मिलती।
- मंदिर एक ऊँचे अधिष्ठान पर बनाया गया है, जहाँ भव्य शिखर एवं जालीदार खिडकियों का निर्माण किया गया है।
- मंदिर के शिखर के ऊपर आमलक तथा कलश की संरचना मिलती है।
- मंदिर के प्रवेशद्वार को सजाया गया है।
- मंदिर पंचयातन शैली में मिलते हैं। (इसके तहत गर्भगृह के चारों ओर 4 अतिरिक्त देवालय बन गए हैं।)
 1. साम्प्रदायिक सौहार्द का तात्पर्य
 2. खजुराहो मंदिर की विशेषताएँ
- प्रमुख मंदिर हैं :-
 - कंदरिया महादेव मंदिर
 - लक्ष्मण मंदिर
 - चतुर्भुज मंदिर / पार्श्वनाथ मंदिर

खजुराहो के मंदिर वैश्विक विरासत की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। यह मंदिर वास्तुकला के साथ-साथ मूर्तिकला का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

राजस्थान-गुजरात मंदिर समूह -

इस समूह के मंदिर भी नागर शैली से संबंधित हैं। आबू पर्वत के पास “दिलवाडा जैन मंदिर” स्थानीय विशेषताओं को शामिल करता है। मंदिर निर्माण में संगमरमर का प्रयोग हुआ है। मंदिर में गुम्बद एवं प्रवेशद्वार उल्लेखनीय हैं। प्रवेशद्वार पर “नौग्रहों का अंकन” इसकी खास विशेषता है। यहां छत के केन्द्रीय भाग में बने हुए कोष्ठक “मेहराब” की संरचना प्रतीत होते हैं जबकि वास्तव में मेहराब का प्रयोग नहीं किया गया है।

इसी तरह गुजरात में पाटन स्थित संगमरमर का मंदिर नागर शैली से युक्त है।

दक्षिण भारत की मंदिर निर्माण शैली/क्षेत्रीय स्थापत्य

↓
पल्लव कला शैली

↓
द्रविड शैली

1. महेन्द्रवर्मन शैली

↓
→ मण्डप मंदिर → शादा मंदिर

2. नरसिंह वर्मन शैली (मामल्ल मंदिर)

मंडप + २थ मंदिर

एकाश्मक मंदिर

-सप्त पैगोडा

3. राजसिंह शैली

ईमारती मंदिर (ईंट से मंदिर)

4. नंदिवर्मन शैली

मंदिर छोटे-छोटे

5. पल्लव कला :-

पल्लव कला मंदिर स्थापत्य की द्रविड शैली से संबंधित है। पल्लवों ने वास्तुकला को "काष्ठकला" से मुक्त किया और पहाड़ियों को काटकर मंदिर निर्माण की नई शैली का विकास किया।

पल्लव मंदिर निर्माण की शैलियाँ :-

1. महेन्द्रवर्मन शैली:- इसमें मुख्य रूप से चट्टानों को काटकर मण्डप की संरचना बनाई गई। यह मंदिर शादगीपूर्ण होते थे। यहां पर बनी पंचपाण्डव गुफा मंदिर में एक तरफ श्री कृष्ण को गोवर्धन पर्वत उठाए हुए दिखाया गया है तो दूसरे में उन्हें गाय दुहते हुए दिखाया गया है।
2. मामल्ल शैली:- इस शैली में मण्डप के साथ-साथ २थ का निर्माण किया गया। ये २थ मंदिर एकाश्मक हैं (एक ही पहाड़ी को काटकर बनाए गए)। इस २थ मंदिरों को सामूहिक रूप में सप्त पैगोडा कहा जाता है जिसमें प्रमुख हैं - धर्मराज २थ (सबसे बड़ा है और शासक नरसिंह वर्मन की मूर्ति बनी है), श्रुंज २थ, भीम २थ, गणेश २थ, द्रौपदी २थ (सबसे छोटा)। इन मंदिरों में देवी देवताओं और राजाओं की प्रतिमा मूर्तिकला का उत्कृष्ट रूप प्रस्तुत करती हैं। इस शैली का प्रमुख केन्द्र महाबलीपुरम था।

3. राजसिंह शैली:- इस शैली में मंदिर ईंट और पत्थरों से बने लगे अर्थात् ईमारती मंदिर बने लगे जैसे- कांचीपुरम का कैलाशनाथ मंदिर इसमें शिव-पार्वती नृत्य पाया गया। यह मंदिर शिव को समर्पित है। इसमें मूर्ति का मुख शिव के जनक, पालक एवं संहारक के रूप में दर्शाते हैं।
4. नंदीवर्मन शैली - इस शैली में मंदिर अत्यंत छोटे बने लगे जो पल्लवों के राजनीतिक पतन को दर्शाता है।

चोल स्थापत्य कला

चोल मंदिर स्थापत्य की द्रविड शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं यहां द्रविड शैली की भव्यता देखी जा सकती है जिसका आधार पल्लवों ने तैयार किया था। चोलों ने 10वीं 11वीं शदी में दक्षिण भारत में एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया (इसी विशालता का दर्शन मंदिर स्थापत्य में मिलता है) इन मंदिरों में शायताकार गर्भगृह दिशामिडनुमा शिखर विशाल गोमुख और पूरा मंदिर एक परकोटे से घिरा है।

प्रमुख मंदिर - तंजौर का वह्दीश्वर मंदिर (निर्माण-राजराज प्रथम)

गंगरेकोण्ड चोलपुरम का वृहदीश्वर मंदिर - निर्माण - राजेन्द्र वृहदीश्वर मंदिर में एक ही पत्थर से बनी विशालकाय नंदी की प्रतिमा है जो देश में दूसरी सबसे बड़ी नंदी की प्रतिमा है पहली आंध्र के लेपाणी मंदिर में है।

चोल मंदिरों के संबंध में फर्ग्युसन ने कहा कि चोल कलाकार शक्ति की तरह सोचते हैं। और जौहरी की तरह तराशते हैं।

चालुक्य कला (बेसर शैली)

चालुक्य कला बेसर शैली का प्रतिनिधित्व करती है। इसे कर्नाटक शैली भी कहते हैं क्योंकि इसका विकास इसी क्षेत्र में हुआ किन्तु इस शैली को मौलिक नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसमें द्रविड और नागर शैली का मिश्रण दिखाई पड़ता है।

इस कला का प्रमुख केन्द्र एहोल, वातापी, पदकूल है। पदकूल में बना विरूपक्ष मंदिर उल्लेखनीय है।

राष्ट्रकूट कला

राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने एलोरा में कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण करवाया। इसमें द्रविड शैली के विमान मणमगोपुरम उल्लेखनीय हैं। इस मंदिर की खास विशेषता यह है कि इसे बनाने के लिये पहाड़ी को ऊपर से नीचे की ओर काटते हुये निर्माण किया गया है। एलोरा में ब्राह्मण, बौद्ध और जैन धर्म से संबंधित गुफा मंदिर हैं।

राष्ट्रकूट के समय एलीफेन्टा गुफा मंदिर का निर्माण किया गया।

यह मंदिर शिव को समर्पित है। इसमें मूर्ति मुख शिव को जनक, पालक एवं संहारक के रूप में दर्शाते हैं। इसके बाहरी प्रांगण में बाजार भी लगता है।

विजयनगर स्थापत्य कला (1336)

कल्याण मंडप- विशाल व भव्य, स्तम्भों वाला भवन

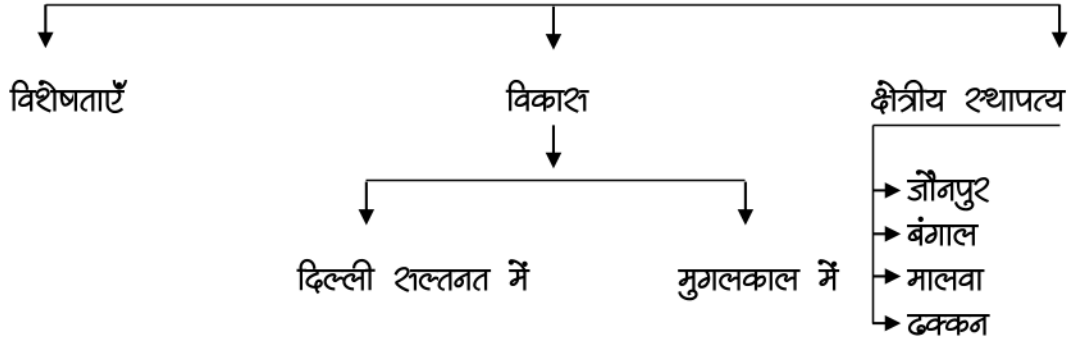
विजयनगर मंदिर स्थापत्य की द्रविड शैली का प्रतिनिधित्व करता है। कृष्णदेवराय के शासनकाल में बना विठ्ठल स्वामी मंदिर इसका सर्वश्रेष्ठ नमूना है। इन मंदिरों में गोपुरम को रायगोपुरम कहा जाता था। मंदिरों में श्रमण मठ एवं कल्याण मंडप उल्लेखनीय हैं। श्रमण मठ देवी को समर्पित है जबकि कल्याण मंडप एक विशाल सभाभवन होता है। जिसमें सैकड़ों स्तम्भ बने होते हैं। विजयनगर राज्य में बना हुआ

लेपाक्षी मंदिर नदी निर्माण के लिए जाना जाता है। यह देश की सबसे बड़ी एकात्मक नदी की प्रतिमा मानी जाती है। विजयनगर साम्राज्य के पतन के पश्चात् वहां नायकों (शांमत) का उदय हुआ फलतः 17वीं शदी के मध्य में तिरुमलाई नायक के काल में सुन्दरेश्वर मंदिर एवं मीनाक्षी मंदिर का निर्माण हुआ।

तमिलनाडु के मदुरैड में वैगई नदी के दक्षिण में यह स्थित है। सुन्दरेश्वर मंदिर शिव को समर्पित है और दूसरे मंदिर देवी मीनाक्षी के रूप में उनकी पत्नी को समर्पित है। प्रायः इन मंदिरों को मीनाक्षी मंदिर के नाम से जाना जाता है। मंदिर की दीवारों, स्तम्भों पर अनेक शकृतियां बनी हुई हैं। मंदिर के पास एक विशाल शरीवर, अनुष्ठानिक प्रयोग हेतु बना था। यह मंदिर सामाजिक शार्थिक जीवन का एक प्रमुख अंग था और अपने स्वरूप में एक शहर जैसा था इसके बाहरी प्रांगण में बाजार भी लगता था।



इण्डो इस्लामिक स्थापत्य कला



त्राबियत (भारतीय शैली)

बल्ली एवम् शहतीर

+

अलंकरण (फूल-पत्ती)

अरकुट (इस्लामी शैली)

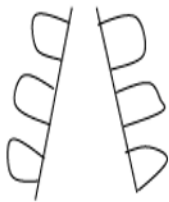
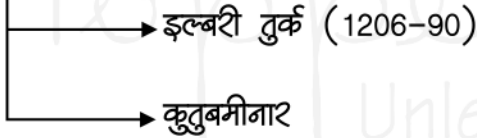
गुम्बद एवं मेहराब

अलंकरण - अरबी में लिखी
कुरान की आयते - कूफी

+

फूल-पत्ती एवं ज्यामितीय
प्रतीकों का अंकन

इण्डो व इस्लामिक शैली की इमारतों में समानता - अँगन व जल स्रोत की उपस्थिति
दिल्ली - सल्तनत



स्टेलेक्टारट

हनीकोमिंग तकनीक

ये ये छिडजे मीनार से जुडे हैं ।

(चूने का रिसाव होने के बाद मजबूत होना)

खिलजी काल



→ घोडे की नाल का आकार की मेहराब
→ अलाई दरवाजा

शैल्युद्ध काल - मकबरे का काल
 लोदी काल - चारबाग शैली
 (भवन के चारों ओर बाग)

तुगलक स्थापत्य
 शलामी का प्रयोग
 तीरछी दीवारें → नीव चौडी हुई भवनो की
 अधिक मजबूती बनाने के लिए

विशेषताएं- इण्डो-इस्लामिक स्थापत्य की सर्वप्रमुख विशेषता त्राबियत एवं अरकुट शैली का सुन्दर समन्वय है। भारतीय शैली त्राबियत (बल्सी व शहतीर) तथा इस्लामिक शैली अरकुट (गुम्बद और मेहराब) कही जाती थी। अरबी लिपि में लिखी गई कुरान की आयतों के साथ फूल-परितियों के माध्यम से भवनों की सजावट या अलंकरण की पद्धति अरबस्क कहलाती है। यह इस्लामिक स्थापत्य कला की खास विशेषता है।

भवन निर्माण सामग्री में पत्थरों का खूब प्रयोग किया गया और पत्थरों को आपस में जोड़ने के लिए चूना पत्थर, गारा, जिप्सम का प्रयोग किया गया। गुम्बद और मेहराब इस्लाम की देन नहीं है वस्तुतः इसकी आरम्भिक संरचना रोम में मिलती है और इसे भारत लाने का श्रेय कुषाण शासकों को दिया जाता है परन्तु भारत में इसे लोकप्रिय बनाने का श्रेय तुर्की शासकों को जाता है।

गुम्बद और मेहराब की संरचना ने भवनों के विशाल तथा भवन के निर्माण को सहज बना दिया वस्तुतः गुम्बद और मेहराब ने छतों को सहारा देने के लिए बड़ी संख्या में स्तम्भों की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया। इसके माध्यम से भवनों की विशालता और मजबूती दोनों आई। चूंकि इस्लाम में प्राणियों के चित्रण को मान्यता प्राप्त नहीं थी अतः अलंकरण में मान्यता प्राप्त नहीं थी अतः अलंकरण में फूल पत्ती एवं ज्यामितीय प्रतीकों का प्रयोग किया गया। इसके तहत “कमल” और “घण्टे” का भी प्रयोग हुआ। इस तरह इस्लामिक स्थापत्य कला में अलंकरण क्रम में धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष पहलू शामिल है।

विकास

दिल्ली सल्तनत काल

- इल्बरी काल:- कुतुबुद्दीन ऐबक ने सुफी सन्त कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के सम्मान में कुतुबमीनार का निर्माण करवाया जिसे इल्तुतमिश द्वारा पूरा किया गया। आगे फिर तुगलक के समय इसकी मरम्मत हुई।
 - यह मीनार शंकु के आकार की है और इसमें बने हुए छडे स्टेलेक्टारट हनीकोमिंग तकनीक से मीनार से जुड़े हुए हैं।
 - कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर में “अढाई दिन का झोपडा” नामक मस्जिद का निर्माण करवाया।
- खिलजी काल :- अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में “अलाई दरवाजा” का निर्माण करवाया। इसमें घोड़े के नाल की आकार की मेहराब बनी है। इसमें “कमल की कली” की तरह की झालरे मौजूद हैं जो अलंकरण के लिए हैं। इसे मार्शल ने, “इस्लामी स्थापत्य कला” के खजाने का सबसे बड़ा हीरा कहा।

3. तुगलक काल:- तुगलक काल में वास्तुकला निर्माण की नवीन शैली शामने आई जब भवन निर्माण में खुरदरे पत्थर, ढालू दीवारे (शलामी) का प्रयोग किया गया। शलामी तुगलक स्थापत्य की खास विशेषता है और इसका निर्माण भवनों को मजबूती प्रदान करने के लिए किया गया था। दिल्ली के पास तुगलकाबाद में गयाखुद्दीन तुगलक ने एक भवन बनवाया। इसकी प्रशंसा करते हुए इब्नबतूता ने कहा कि शूर्योदय के समय यह इतनी तेजी से चमकता है कि इस पर किसी की आंख टिक नहीं पाती।



सैय्यद एवं लोदी काल

सैय्यद शासनकाल में मकबरों का बड़ी संख्या में निर्माण हुआ। अष्टकोणीय मकबरे इस काल की उल्लेखनीय विशेषता लोदी काल में भवनों को बागों के मध्य ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया है जो मुगल काल में “चारबाग शैली” के रूप में लोकप्रिय हुआ।



क्षेत्रीय स्थापत्य :-

1. जौनपुर (शर्की शैली)

- जौनपुर में शर्की वंश की स्थापना हुई। इस काल में जौनपुर कला, शिक्षा, साहित्य का केन्द्र बना। इसी संदर्भ में इसे “पूर्व का शिराज” कहते हैं।
- शर्की शैली में मुख्यतः वर्गाकार स्तम्भ, ढलवा दीवारे और छायादार शरते उल्लेखनीय हैं। साथ ही प्रवेश द्वार की राजावट और उसकी विशालता शर्की शैली की विशिष्टता है जैसे- अटाला मस्जिद, झंझरी मस्जिद इत्यादि।
- शर्की स्थापत्य पर तुगलक स्थापत्य का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

2. मालवा स्थापत्य:-

- यहां की वास्तुकला की खास विशेषता यह थी कि धरातल से प्रवेशद्वार तक बनी हुई भव्य एवं चौड़ी सीढ़ियाँ और भवनों में रंगीन पत्थरों का प्रयोग किया गया है।
- मस्जिदों में मीनारे नहीं हैं। प्रमुख उदाहरण हैं- अशफ़ी महल, हिंडोला महल, जहाज महल इत्यादि।

3. बंगाल स्थापत्य :-

- बंगाल स्थापत्य में मुख्यतः ईंटों का प्रयोग किया गया है और नुकिले मेहराब बनाए गए हैं जैसे-अदीना मस्जिद, बारी सोना मस्जिद।

4. दक्कन स्थापत्य-

- दक्कन में 14 से 16वीं शदी के बीच वास्तुकला की जिन शैली का विकास हुआ उस पर तुगलक एवं ईरान की निर्माण कला का प्रभाव दिखाई देता है। बिजापुर में मोहम्मद आदिल शाह का मकबरा जो गोल गुम्बद के नाम से जाना जाता है उल्लेखनीय है। इसकी खास विशेषता इसके अन्दर ध्वनि का गुंजना है।

मुगल काल

मुगल स्थापत्य कला की विशेषताएं :-

- मुगल स्थापत्य कला में इण्डो-इस्लामिक शैली का सुन्दर समन्वय मिलता है। इसमें बौद्ध, जैन और ईरानी शैलियों के तत्व मिलते हैं।
- भवनों में बलुआ पत्थर और रंगमरमर का प्रयोग किया गया।

